आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2720 • उदयपुर, सोमवार 06 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता–मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 17 मई को कैसर हॉस्पीटल आमखों, ग्वालियर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लांयस क्लब, ग्वालियर आस्था रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 169, कृत्रिम अंग माप 55, कैलिपर माप 20 की सेवा हुई तथा 06 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि डॉ. बी.आर. जी श्रीवास्तव (कैंसर हॉस्पीटल, डायरेक्टर), अध्यक्षता श्रीमती रजनी जी अग्रवाल (अध्यक्ष, लांयस क्लब आस्था), विशिष्ट अतिथि श्री जगदीश शरण जी गुप्ता (रीजन चेयरपर्सन), श्रीमान् तालीब जी खान (जोन चेयरपर्सन), श्रीमान् रमेश जी श्रीवास्तव (गाइडिंग लायन)रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री हरीश सिंह जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

भारतीय सेना के सहयोग से नारायण सेवा का शिविर सम्पन्न

त्रिदिवसीय शिविर में नोर्थ कश्मीर के 410 दिव्यांगों को मिली चिकित्सा

नारायण सेवा संस्थान द्वारा गान्दरबल, श्रीनगर के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में बसे दिव्यांगों के लिए बुसन बटालियन, कंगन और 34 असम राइफल्स के सौजन्य से कंगन आर्मी गुडविल सैकेण्डरी स्कूल में त्रिदिवसीय कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने विज्ञप्ति जारी कर बताया कि मेजर अनूप व केप्टन विपुल की मौजूदगी में तीनों दिन तक चले शिविर में संस्थान के डॉक्टर्स एवं प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिस्ट टीम ने 410 रोगियों को परामर्श दिया। 78 दिव्यांगों का केलीपर्स और कृत्रिम हाथ–पैर का माप लिया तथा 90 भाई–बहनों को शल्य चिकित्सा के लिए चिन्हित किया गया। शिविर में 70 फौजी–जवानों की टीम सहायता में लगी हुई थी। वही संस्थान की 15 सदस्य टीम ने अपनी सेवाएं दी। उन्होनें कहा कुछ सप्ताह बाद आर्मी के सहयोग से कृत्रिम अंग, केलीपर्स और सहायक उपकरण वितरण केम्प स्थानीय ग्रामीणों के लिए लगाया जाएगा।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 12 जून, 2022

▪ माता बाला सुन्दरी प्रांगण, शहजादपुर,
अम्बाला, हरियाणा

▪ श्री एसएस जैन संघ मार्केट,
बल्लारी, कर्नाटक

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष

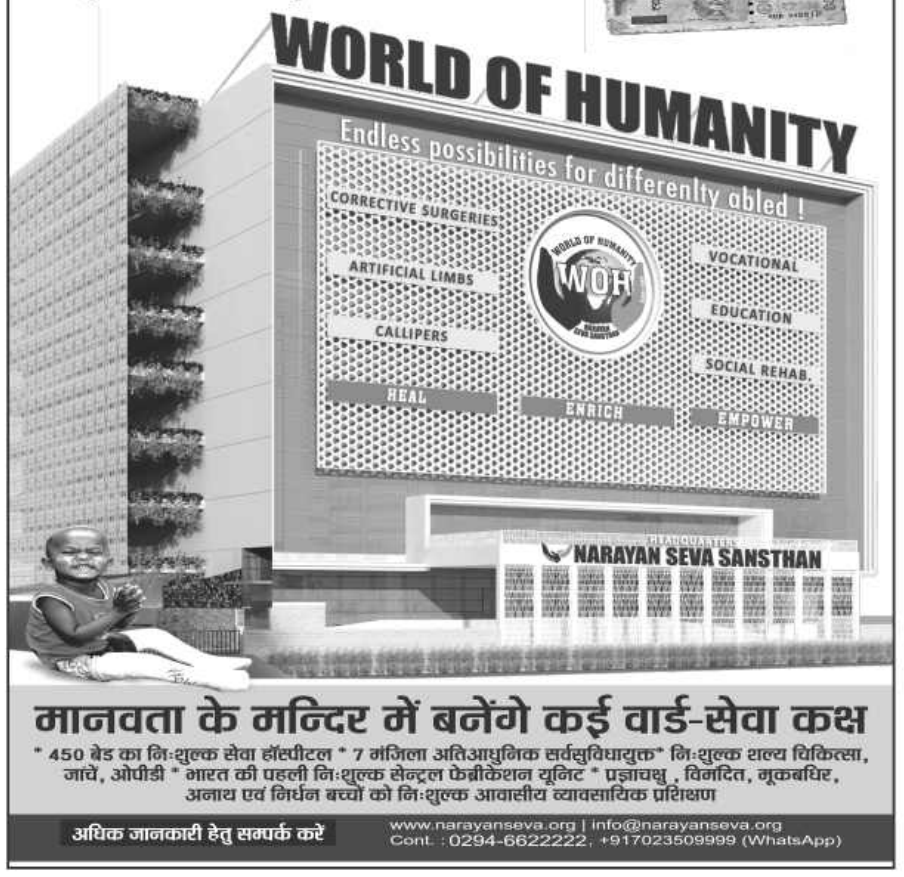

" 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल " 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त" निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी " भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट " प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

सेंट्रल फेब्रिकेशन यूनिट शुरु

पैरा ऑलम्पियन-अर्जुन अवार्डी दीपा मलिक ने किया उद्घाटन

पैरालम्पिक कमेटी ऑफ इण्डिया की अध्यक्ष एवं अर्जुन अवार्डी पैरा ऑलम्पियन दीपा मलिक ने दिव्यांगजन से कहा कि वे दिल से डर और निराशा को दूर करें और अत्याधुनिक सहायक उपकरणों की मदद लेकर जीवन को संवारने की पहल करें। 15 मई नारायण सेवा संस्थान के लियों का गुड़ा परिसर में अंतर्राष्ट्रिय रोटरी के सहयोग से दो करोड़ की लागत से स्थापित देश की पहली अत्याधुनिक कृत्रिम अंग निर्माण इकाई का उद्घाटन कर रही थी। उन्होंने अपने जीवन संघर्श से रूबरू कराते हुए कहा कि विकलांगता के दंश के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और सार्थक जीवन के लिए सकारात्मक सोच और कड़े परिश्रम के साथ आगे बढ़ी। नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगजन के जीवन को बेहतर बनाने का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इस ईकाई में बनने वाले कृत्रिम अंग दिव्यांगजन को सामान्य रूप से अपनी दिनचर्या के निर्वहन में सहायक होंगे।

संस्थान संस्थापक पूज्य गुरूदेव कैलाश जी 'मानव' ने मुख्य अतिथि दीपा जी मलिक, विशिश्ट अतिथि पूर्व विधायक श्री ज्ञानदेव जी आहूजा वरोटरी क्लब, उदयपुर मेवाड़ के पदाधिकारियों का स्वागत किया। संस्थान अध्यक्ष प्र ाांत जी भैया ने कहा कि बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं चिंता का विशय है। इसमें हाथ–पैर खोने वाले ही नहीं, उनके परिवार भी अत्यंत कश्टदायी जिन्दगी जीने को मजबूर हो जाते हैं। आंकड़ो की बात करें तो देश में लगभग 2 प्रतिशत हिस्सा दिव्यांगता का शिकार है, इसमें ज्यादा संख्या कटे–हाथ पैर वालों की है। ऑटोबोक जर्मनी से आयातित मशीनों से इस ईकाई में बनने वाले

कृत्रिम अंग दिव्यांगजन को निःशुल्क उपलब्ध करवायें जायेंगे जो मशीनों से इस उनके जीवन को आसान बनायेंगे। रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर–मेवाड़ के संरक्षक हंसराज चौधरी ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगजन के कश्टदायी जीवन को बेहतर बनाने के पिछले 37 वर्शो से किये जा रहे कार्यो से इम्प्यूरी ड्यूड हिल्स यूएसए काफी प्रभावित हुआ और उसने इस ईकाई में सहयोग के लिए रोटरी क्लब, उदयपुर की अनुशंसा को प्राथमिकता के आधार पर स्वीकार किया। इससे संस्थानको देश ही नहीं विदेशों में भी कृत्रिम अंग लगाने के कार्यो में गति और आसानी होगी। संस्थान के प्रोस्थेटिक एंव ऑर्थोटिक यूनिट हेड मानस रंजन जी साहू ने नव स्थापित सेन्ट्रल फेबिक्रेशन यूनिट कीप्रणाली और उपयोगिता की जानकारी दी। उद्घाटन समारोह में रोटरी क्लब, उदयपुर के अध्यक्ष आशीश जी हरकावत, पूर्व प्रांतपाल श्री निर्मल जी सिंघवी, पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेश जी जैन, संस्थान संह सहसंस्थापिका श्रीमती कमला देवी जी अग्रवाल, निदेशक वंदना जी अग्रवाल तथा परियोजना प्रभारी श्री रविश जी कावड़िया भी मौजूद थे। संचालन श्री महिम जी जैन ने किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

राम ही केवल प्रेम प्यारा।
जान लेहि जो जानन हारा।

हाँ, महाराज रामचरितमानस पढ़ते हैं। जीवन का सूत्र मिलता है।

प्रातःकाल उठ के रघुनाथा। अपने को भी प्रातःकाल उठ जाना चाहिये।

बेला अमृत गया,
आलसी सो रहा बन अभागा।
साथी सारे जगे, तूं न जागा।।
हंस का जीव था,
गंदला पानी पीया बन के कागा।
साथी सारे जगे तूं न जागा।।

अब भी जाग जावे। अपना व्यवहार बढ़िया कर लेवें। अपने कर्त्तव्य निभा लें। आप खिलाते हैं। आप यदि नहीं होते तो 1976 में पिण्डवाड़ा की पीड़ा में इन्सानजी नहीं होते तो कौन मदद करता ? आदरणीय सोहनलालजी पाटनी साहब, अब तो अन्तरिक्ष से आ ीर्वाद दे रहे हैं। उस समय प्रोफेसर थे सिरोही के हॉस्पीटल में मिल गये। देखते रहे एक आदमी बेड पर जा रहा है। अपने बेग में से कभी गुब्बारे निकाल कर बच्चों को दे रहा है। कभी कोई चाकलेट दे रहा है। उस समय झोले में एक किलो मोसम्बी छः रुपये में आ जाती थी। किसी को मोसम्बी दी। उन्होंने बड़े प्रेम से बुलाया,बोले– आपका परिचय बताइये। आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। मैं पोस्ट ऑफिस में सेवाए देता हूँ राजकीय अधिकारी हूँ ,सीनियर अकान्ट्स ऑफिसर हूँ। अच्छा ! आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। हम तो इतना अच्छा काम नहीं कर पाते। टाईम नहीं निकाल पाते, आप रोज आ जाते हो मेरे लायक सेवा बताइये। मैंने कहा– बाबूजी, यहाँ रोगी बहुत पधारते हैं। उनके पास दवाई का पैसा नहीं होता। डॉक्टर साहब पर्ची तो लिख देते हैं पर दवाई कहाँ से लावे। आप कोई दवाई की व्यवस्था करा दीजिये। बोले– आइये आइये मेडिकल स्टोर के पास ले गये। मेरा परिचय करा के बोला–कैला ाजी की चिट्ठी आ जावे महिने में दो हजार रुपये तक की दवाइयें मेरे नाम तक लिख कर दे देना। दो हजार रुपये एडवांस जमा करा दिये उन्होंने। ये दो हजार रुपये जमा कर दो। इसमे दवाइये देते रहना। ऐसे महानुभाव 1976 में मिले।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

मनोहर के परिवार को मिला सहारा

मैं मनोहर लाल मीणा 38 साल अपने 4 बच्चों व पत्नी के साथ उदयपुर की सरू पंचायत में रहता हूं। तीन साल पहले पास के स्कूल में बिजली ठीक करने गया था। अचानक करंट लगने से कमर और रीढ़ की हड्डी क्षतिग्रस्त हो गई। अब भी चल–फिर नहीं सकता। कमर के नीचे से पूरी तरह विकलांग हूं, इलाज हेतु 2 लाख में खेत भी बेच दिया, फिर भी ठीक नहीं हुआ।

तीन साल से बिस्तर पर पड़ा हूं। घर में कमाने वाला कोई नहीं है, इसलिए बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी। एक बच्चा काम पर जाता है, पत्नी–बच्चा मजदूरी करके सबका गुजारा कर रहे हैं। कई बार पास–पड़ोसी खाना दे जाते हैं। मेरी स्थिति की जानकारी नारायण सेवा संस्थान को सरपंच और पड़ोसियों ने दी। संस्थान ने हमें एक माह की राशन सामग्री (जिसमें आटा, दाल,नमक–मसाले, तेल, शक्कर, चायपत्ती) आदि की मदद की। हमें बहुत राहत मिली। इलाज का आश्वासन भी दिया कि मदद करेंगे। राशन हर माह मिल रहा है।

सम्पादकीय

प्रगति एक सतत् प्रक्रिया है। प्रगतिशील व्यक्ति ही समय के साथ सामंजस्य बैठा सकता है। यों प्रगति का अर्थ वर्तमान में संकुचित होकर केवल आर्थिक क्षेत्र का मूल्यांकन ही होता जा रहा है। वस्तुतः प्रगति तो सर्वांगीणहै। प्रगति चहुँमुखी हो तभी वह संतुलित कहलाती है। आज आर्थिक प्रगति पर तो सबका पूरा–पूरा ध्यान रहता है किन्तु जो प्रगति मानव का मूल्य स्थापित करती है उस तरफ भी ध्यान अपेक्षित होता है।

प्रगति को वैचारिकता, मानवीयता तथा पावनता से भी जोड़ा जाना आवश्यक है। मूल्यांकन के समय इन क्षेत्रों को भी जोड़ना होगा तभी सर्वांगीण प्रगति होगी। आज वैश्विक स्वास्थ्य संकट है तो इन कसौटियों की प्रासंगिकता भी बढ़ गई है। विश्व में कोई भी देश मानवीय सुरक्षा के उपाय खोजे तो उसे सबके लिये उपयोगी बनाने की भी पहल हो। यो मानव में परहित भाव जन्मजात होता है किन्तु परिस्थिति के कारण वह क्षीण हो सकता है। मानव सेवा का भाव पुनः पूर्ण रूप से उदित हो यह भी प्रगति का एक प्रकार ही है। यों सभी इस दिशा में प्रयासरत हैं पर समवेत प्रयास से ही प्रगति दृष्टिगत होगी।

कुछ काव्यमय

मैं मेरा मेरे लिये
यह है घातक सोच।
इसमें कहां समानता,
यह प्रगति में पोच।।
मैं सबका मेरे सभी,
यही है सोच उदार।
तभी संतुलित बन सके,
प्रगतिशील सुविचार।।

अपनों से अपनी बात

संघर्ष से ही सफलता

जीवन में संघर्श और चुनौतियां तो होगी ही, उनसे भागना अथवा निराश होना कायरता है। कभी–कभी ईश्वर भी मानव की प्रतिभा व गुणों को निखारने के लिए उसके समक्ष चुनौतियां पेश करते हैं। ठीक उस पेड़ की तरह जो गर्मी, सर्दी, धूप, बरसात, आंधी सब मे डटा रहता है और अन्ततोगत्वा फल–फूलों सेलदकर प्राणी मात्र की सेवा कर जीवन को धन्य करता है। एक बार एक किसान भगवान से बहुत नाराज हो गया। कभी बाढ़ आ जाए, कभी सूखा पड़ जाए तो कभी ओले पड़ जाए। हर बार कुछ न कारण से उसकी फसल थोड़ी खराब हो जाती। एक दिन तंग आकर उसने परमात्मा से कहा–देखिए प्रभु, आप परमात्मा हैं लेकिन लगता है लेकिन लगता है आपको खेती–बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है, एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिए, जेसा में चाहूं वेसा मौसम हो, फिर आप देखना मैं कैसे अन्न का भंडार भर दूंगा। परमात्मा मुस्कराए और कहा–ठीक है, जेसा तुम चाहोगे वैसा ही मौसम सिर्फ

तुम्हारी खेती के लिए होगा, मैं दखल नहीं करूंगा। अब किसान ने गेहूं की फसल बोई, जब धूप चाही, तब धूप मिली, जब पानी चाहा तब पानी मिला। सर्दी, तेज धूप, ओले, बाढ़, आंधी तो उसने आने ही नहीं दी, समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की खुशी भी, क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी। किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को कि फसल पैदा कैसे करते हैं। बेकार ही इतने बरस किसानों को परेशान करते रहे। फसल काटने का समय भी आया, किसान बड़े गर्व से फसल काटने गया, लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा, एकदम से माथे पर हाथ रख कर बैठ गया। गेहूं की एक भी बाली के अंदर गेहूं का दाना नहीं था, सारी बालीया खाली थी, दुःखी होकर उसने परमात्मा से कहा–प्रभु ये क्या हुआ ? तब परमात्मा बोले–ये तो होना ही था, तुमने पौधे को संघर्श का जरा सा भी मौका नहीं दिया। ना तेज धूप में उसको तपने दिया, ना आंधी, ओलो, सर्दी से जूझने दिया, उनको किसी प्रकार की चुनौती का अहसास जरा भी नहीं होने दिया, इसीलिए सब पौधे खोखले रह गए। जब आंधी आती है, तब तेज बारिश होती है, ओले गिरते है तब पौधे अपने बल से ही खड़े रहते हैं, ये चुनौतियां ही उसे शक्ति देती हैं, ऊर्जा देती हैं, उसी जीवटता को उभारती हैं। सोने को भी कुंदन बनने के लिए आग में तपने, हथौड़ी से पिटने, गलने जैसी चुनौतियों से गुजरना पड़ता है तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है, उसे अनमौल बनाती है।

इसी तरह जिन्दगी में भी अगर संघर्श ना हो तो आदमी खोखला ही रह जाता है, उसके अंदर कोई गुण नहीं आ पाता। ये चुनौतियां ही हैं जो आदमी को सशक्त और प्रखर बनाती हैं, अगर प्रतिभाशाली बनना है तो चुनौतियां तो स्वीकार करनी ही पड़ेगी।

– **कैलाश 'मानव'**

खुशियां बांटने में ही आनन्द

आपश्री के दान, सहयोग और आशीश से अप्रेल माह में देश के दर्जन भर से अधिक नगरो–महानगरों में संस्थान ने निःशुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन, चयन कृत्रिम अंग माप एवं वितरण शिविरों का आयोजन कर थमी हुई जिन्दगीयों को फिर सक्रिय कर उनके परिवारों को खुशियों का उपहार प्रदान किया।

प्रकृति भी बड़ी अजग–गजब है। हर मौसम में हर पल बस देती ही रहती है। बदले में हमसे कुछ मांगती नहीं, लेती नहीं। निःस्वार्थ भाव और समान रूप से सबकी जरूरत को पूरा करती है। आश्चर्य तो इस बात का है कि रात–दिन, हर घड़ी–पल देते ही रहने के बावजूद इसका कोश कभी रिक्त नहीं होता। यह इस बात का घोतक है कि सच्चे मन से किसी की जरूरत को पूरा करने अथवा दीन–दुःखी पीड़ित की सेवा में किया गया खर्च किसी न किसी रूप में द्विगुणित होकर वापस लौट आता है। जो ऐसा भाव रखता है और

अमल में लाता है वह सदैव खुश और आबाद रहता है। आपश्री भी ऐसे ही संवेदनशील सेवा मनीशी है। संस्थान से जुड़कर आपने अनेक भाई–बहनों के आंसू पोंछे हैं। कितने ही दिव्यांगजन का ऑपरेशन करवाकर उन्हें अपने पांवों पर खड़ा किया है और हादसों में अपने हाथ–पांव खो देने वालों को कृत्रिम अंग का उपहार देकर उनकी थमी हुई जिन्दगी को पुनः सक्रिय कर, उनके घर–परिवारों को खुशियों की सौगात दी है। उन्हें अपनी पूर्णता का अहसास करवाया है। श्रीमन् आपश्री के दान, सहयोग और आशीश से अप्रेल माह में देश भर से अधिक नगरों–महानगरों में संस्थान ने निःशुल्क दिव्यांग जांच, ऑपरेशन, चयन कृत्रिम अंग माप एवं वितरण शिविरों का अयोजन किया। जिनमें हजारों दिव्यांगजन का पंजीयन हुआ। इस सम्बन्ध में विस्तृत विविरण इसी अंक के अगले पृश्ठों पर आप देख सकेंगे। हादसों में अपने हाथ–पैर गंवा देने वाले बन्धु–बहिनों के लिए संस्थान आपके सहयोग से मोड्यूलर आर्टिफिशयल लिम्बस् कृत्रिम अंग मं उपलब्ध तो करवा ही रहा है, साथ ही इस बात की कोशिश कररहा है कि कृत्रिम अंग और अत्याधुनिक हों और जल्द से जल्द मुहैया करवाए जाएं। इसके लिए एक वर्श पूर्व 20 मार्च को रोटरी अन्तर्राश्ट्रिय के सहयोग से सेन्ट्रल फ्रेबिकेशन यूनिट की स्थापना का कार्य आरम्भ हुआ था, जो इसी माह पूर्ण होकर आपश्री की शुभ भावनाओं के साथ 15 मई को लोकार्पित हुआ। इस फ्रेबिकेशन यूनिट से कृत्रिम अंग बनाने के काम में शीघ्रता तो आएगी ही ,वे अधिक हल्के गुणवता और सुविधा युक्त भी होंगे। मुझे यह बताते हुए भी हश हो रहा है कि वर्ल्ड ऑफ हम्युनिटी का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है और आगामी वर्श में आपश्री के सानिध्य में उसका सेवा कार्यो के लिए लोकार्पण सम्भव हो सकेगा। आपका आशीर्वाद और मार्गदर्शन संस्थान को मिलता रहे। इसी आशा और विश्वास के साथ। आपश्री को प्रणाम।

– **सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

उदयपुर के आदिवासी अंचल में पानरवा अत्यंत एवं दुर्गम क्षेत्र था। कई लोगों का कहना था कि इस क्षेत्र के गरीब आदिवासियों की सेवा की बहुत आवश्यकताएं हैं। बसें वहां चलती नहीं थी, उबड़–खाबड़ रास्ते थे, जीप से ही वहां जाना संभव था। जीप में सामान ले जाने की भी सीमा थी, क्या करते, इतने लोगों का आग्रह था तो जाना तो था ही।

एक दिन जीप लेकर, जितना अधिक सामान आ सकता था, उतना लेकर पानरवा पहुँचे। वहां पहुँचते ही ढेर सारे लोग एकत्र हो गये। दीन–हीन, लाचार, ऐसी निर्धनता तो अन्य आदिवासी क्षेत्रों में भी दिखाई नहीं देती थी। इनकी दशा देखकर सबके मन पसीज गये। कमला तो मन ही मन यह सोचे जा रही थी कि इतने सारे लोग यहां हैं और सामान इतना कम ला पाये हैं तो कई लोगों की खाली हाथ लौटते देखना कितना पीड़ादायक होगा।

एक आदिवासी औरत अपनी बगल में गांठ लिये दिखाई दी। गांठ को उसने अपने से ऐसे चिपका रखा था जैसे उसका बच्चा हो। किसी ने उससे पूछा कि गांठ में क्या है तो बताने को तैयार नहीं। एक ने गांठ खुलवा ली तो उसमें जड़ें निकली, यही उसकी पूंजी थी। ऐसी घनघोर गरीबी देखकर सबकी आंखें नम हो गई। घर उसके था नहीं, पेड़ के नीचे रहती थी और जड़ें खाकर ही गुजारा करती थी।

कई बच्चे नजर आये जो अनाथ थे। माताएं नाते चली जाती हैं तो बाप परवाह नहीं करते। मां जिस घर में नाते जाती है वह पुरुष बच्चों को स्वीकार नहीं करता। ऐसे में बच्चे अनाथों की तरह जीवन जीने को मजबूर हो जाते हैं। पानरवा का अनुभव कैलाश को बहुत सीख दे गया। उसने मफत काका को यहां के हालात के बारे में बताया तो वे ऐसे द्रवित हुए कि खुद अपनी आंखों से लोगों की दशा देखने पानरवा आये। मफत काका का खुद का बचपन अत्यन्त गरीबी में व्यतीत हुआ था। उनका जन्म गुजरात में हुआ था मगर वे मुम्बई आकर रहने लगे थे। उनकी माता का नाम दीवाली बेन था। उनकी माता अक्सर उन्हें कहती रहती थी कि बेटा ! अगर जिन्दगी में कभी भगवान तुझे रुपये दे तो गरीबों को सूखड़ी खिलाना। गुजरात में सत्तू को सूखड़ी ही कहते हैं। मां कहती थी सूखड़ी खिलाना और छाछ पिलाना।

पानरवा के गरीबों को अपने हाथों में सूखड़ी खिलाते और छाछ पिलाते हुए मफत काका की आंखों के सामने बरबस ही मां का चेहरा उभर आता था और वे अपने आंसू रोक नहीं पाते थे।

अंश - 117

थायरॉइड की समस्या है तो

थायरॉइड ऐसी बीमारी है जिस पर खानपान, का तुरंत असर पड़ता है। इसलिए कुछ चीजें खाने से बचें, जैसे सोयाबीन। इसमे हाइपो–थायरॉयडिज्म का जोखिम बढ़ता है। इसमें फाइटोएस्ट्रोजन होता है, जो थायराइॅड हार्मोन को बढ़ा देता है। इसी तरह गोभी, ब्रोकली, कैफीन वाली चीजें, सफेद चीजें जेसे चावल, पास्ता, ब्रेड भी खाने से बचना चाहिए। प्रोसेस्ड या जंक फूड में सोडियम अधिक होता है। सोडियम मरीज की सेहत थायरॉइड बढ़ाने के साथ दूसरे तरीकों से भी हानि करता है। हैल्दी डाइट के साथ आयोडीनयुक्त नमक ही खाएं। रोज योग करें।

पैरों में जलन के लिए इन्हें आजमाएं

पैरों में जलन होने से खासी दिक्कत का सामना करना पड़ता है। ये उपचार ट्राई करें –

- रात में पैरों को थोड़ी देर ठंडे पानी में डालकर रखें।
- गर्म पानी या किसी तरह की क्रीम को इस्तेमाल करने से बचें।
- नारियल तेल में हल्दी मिलाकर इसे पैरों पर लगाएं।
- दूध व हल्दी का नियमित सेवन भी राहत दिलाएगा।
- ठंडे पानी में कुछ मात्रा एप्सम सॉल्ट को डालकर रखें।
- एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति अपना सकते हैं।
- यह जांच करवाएं कि कही बर्निंग फीट सिंड्रोम तो नहीं है हो तो विशेषज्ञ की सलाह लें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

इन परमानंद के क्षणों में जब दिनाक 12 मई 2020 प्रातःकाल की 6 बजे पिछली घटनाओं के सिंहावलोकन में जा रहा हूँ। लगता है भगवान ने बहुत कृपा कर दी है– लाला। अनंत अनंत कृपा कर दी– जो कहते हैं कि–

प्रभु की कृपा
भयो सब काजु।
जन्म हमार सफल
भयो आजु।।

वास्तव में जन्म सफल हो गया। कुछ किया नहीं– लाला। होता चला गया। मैं भी घटना क्रम का एक अंश बना। काल चक्र का पहिया घूमा बीसलपुर के पूज्य राजमल जी जैन साहब से मिलन हुआ, बहुत प्रेरणाएं उनसे प्राप्त हई। आपश्री ने देश को समाज को नारायण सेवा को सब कुछ दिया है। पूज्य राजमल जी जैन साहब हम आपको क्या देंगे? अपनी आग तेज रखने को नारायण सेवा के घटना क्रम को शुद्ध मंगलमय भावों के साथ बढ़ाने में शुभ नाम आपका लेंगे। बाबू भैया, सभी मंगल हो गया ठाकुर जी की कृपा हो गई। जैसा कि परसों मैंने कहा कल्पना अर्थात गीता विवाह करके बॉम्बे पधार गई। प्रशांत का बी.एन. कॉलेज का प्रशिक्षण चलता रहा। कमला जी का सहयोग चलता रहा। इस बीच पुराने बहुत से साथी साथ ही रहे। निरंतर साथ रहे। हाँ, गिरधारी जी कुमावत साहब जरूर अन्य कार्यों के लिए महाराष्ट्र चले गये थे। वह भी पुनः आए। जगदीश जी आर्य, देवेन्द्र जी चौबीसा, (अन्तरिक्ष से आशीर्वाद देने वाले नाना लाल जी नंदवाना साहब) रूप लाल जी मेहता साहब, भँवर लाल जी परमार साहब और पारब्रह्म परमात्मा की कृपा से पी.जी. जैन साहब देवलोक से अब हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। उनकी कृपा बनी रही। अभी अभी कुछ चित्र मानस में तैर रहे हैं। बच्चे प्रार्थना कर रहे हैं। ये निराश्रित बच्चे, भगवान के बच्चे, अनाथों के नाथ भगवान के बच्चे, समाज के बच्चे, आदिवासी वनवासी नन्ने मुन्ने बालक टाबर जिस दिन सेवाधाम में पधारे थे। सुबह 6 बजे इनको कुछ प्रसाद जीमाया। पोहे का नाश्ता कराया, फिर भोजन बनने लगा।

करीबन 12.30 बजे मैंने कहा भाई कुछ बच्चों के लिए आप सहायता कर दो– सहयोग कर दो। जो बच्चे गए 4–6 बच्चे लौट के आए। कहा कि हमें अंदर प्रवेश नहीं करने दे रहे हैं। कहते है कि आप कमरे में मत आना। मैं समझ गया। इन जातियों में जाति गत के भेदभाव ने बहुत रूलाया है। जहाँ कर्म फल की महानता रही कर्म कैसे रहे? वहीं कई सालों तक कई सदियों तक जातिगत भेदभाव चलता रहा। मैंने समझाया अन्दर जा कर के प्रेम से व्यवस्था की, वो भी एक जीवन में, एक नया अध्याय बना, और बच्चों की प्रार्थनाएं भोजन के बाद सायं कालीन प्रार्थना प्रांरम्भ हुई, बच्चे गा उठे।

हरि शरणम् हरि शरणम।
पीर हरो प्रभु, पीर हरो।।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 470 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023